Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Prelims)

पेपर – 1 || भाग - 1

प्राचीन एवं मध्यलाकीन भारत और छत्तीसगढ़ का सामाजिक परीदृश्य

SIERRA INNOVATIONS

Chhattisgarh Public Service Commission

पेपर - 1 भाग - 1

प्राचीन एवं मध्यलाकीन भारत और छत्तीसगढ़ का सामाजिक परीदृश्य

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत** • पुरातत्व स्रोत • साहित्यिक स्रोत	1
2.	**पाषाण युग** • पुरापाषाण काल (Paleolithic Age) • मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age) • नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल	5
3.	**ताम्र पाषाणिक काल (3000 500BC)** • विशेषताएं • महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण संस्कृतियां और उनकी विशेषताएं • महापाषाण (मेगालिथ)	9
4.	**सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)** • सिंधु घाटी सभ्यता की खोज • हड़प्पा सभ्यता के चरण • हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल • सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं • सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	13
5.	**वैदिक काल (1500 600BC)** • वैदिक साहित्य • प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व 1000 ईसा पूर्व) • उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व 600 ईसा पूर्व)	20
6.	**बौद्ध धर्म और जैन धर्म** • उत्पत्ति के कारण • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • अन्य नास्तिक संप्रदाय	27
7.	**महाजनपद काल (600 300 BC)** • महाजनपद • मगध के उदय के कारण • हरण्यक राजवंश • शिशुनाग राजवंश • नंद राजवंश • महाजनपद के युग में सामाजिक और भौतिक जीवन • महाजनपद के युग के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था • कानूनी और सामाजिक व्यवस्था • विदेशी आक्रमण	45
8.	**मौर्य सम्राजय** • भौगोलिक विस्तार	51

	• मौर्य साम्राज्य के इतिहास के स्रोत • मौर्य राजवंश • मौर्य प्रशासन • मौर्य अर्थव्यवस्था • मौर्यकालीन समाज	
9.	**मौर्योत्तर काल** • मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण • इंडो यूनानी/बैक्ट्रियन यूनानी • शक / सीथियन • सीथो पार्थियन/ शक पहलव • कुषाण/ यूची/ टोर्चियन • मध्य एशियाई घुसपैठ का कालक्रम • मध्य एशियाई संपर्कों का प्रभाव • स्वदेशी शासक राजवंश	**60**
10.	**संगम युग** • प्रारंभिक पांड्या साम्राज्य • चोल • चेर साम्राज्य • संगम युग के दौरान जीवन • संगम साहित्य	**67**
11.	**गुप्त युग** • गुप्त काल के अध्ययन के स्रोत • गुप्ता वंश के शासक • गुप्त प्रशासन • गुप्त कला और वास्तुकला • गुप्त साम्राज्य का पतन	**72**
12.	**दक्कन के वकटक** • विंध्यशक्ति प्रथम • प्रवरसेन	**78**
13.	**गुप्तोत्तर काल** • क्षेत्रीय विन्यास का युग • उत्तर भारत के शासक राजवंश	**79**
14.	**पूर्व मध्यकालीन भारत (750 1200 AD)** • मध्यकालीन युग • भारतीय सामंतवाद • गुर्जर प्रतिहार • बंगाल के पाल शासक • राष्ट्रकूट • त्रिपुरी की चेदि (कलचुरी) • बंगाल के सेन • पश्चिमी गंग • पूर्वी गंग • कश्मीर का इतिहास ○ कर्कोट राजवंश	**87**
15.	**चोल साम्राज्य (850 1200 ईस्वी)**	**99**

	• उत्पत्ति • इतिहास के स्रोत • राजनीतिक इतिहास • प्रशासनिक संरचना • कला और वास्तुकला • अर्थव्यवस्था • समाज • कल्याणी के चालुक्य • चोल चालुक्य युद्ध • चोल साम्राज्य का अंत	
16.	**संघर्ष का युग** • देवगिरी के यादव • वारंगल के काकतीय • द्वारसमुद्र के होयसाल • राजपूत राज्य	**107**
17.	**अरब आक्रमण** • अरब आक्रमण के प्रमुख कारण • सिंध की अरब विजय • गजनवी • भारत में तुर्की के आक्रमण की सफलता के कारण	**113**
18.	**दिल्ली सल्तनत** • गुलाम/इल्बारी राजवंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैय्यद वंश • लोदी राजवंश • दिल्ली सल्तनत के तहत प्रशासन, आर्थिक और सामाजिक जीवन • दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण	**118**
19.	**विजयनगर और बहमनी साम्राज्य** • विजयनगर साम्राज्य • संगम वंश • सलुव वंश • तुलुव वंश • अराविदु राजवंश • बहमनी सल्तनत • दक्कन सल्तनत	**128**
20.	**मुगल साम्राज्य** • बाबर (1526 1530 ई.) • हुमायूँ (1530 1540ई.) • सूर साम्राज्य (1540 1555 ई.) • अकबर (1556 1605ई.) • जहाँगीर (1605 1627 ई.) • शाहजहाँ (1628 1658 ई.) • औरंगजेब (1658 1707 ई.) • मुगल साम्राज्य का पतन	**139**

21.	**मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य** • मराठों का उदय • शाहजी भोंसले • शिवाजी भोंसले • संभाजी • राजाराम • शाहू • राजाराम द्वितीय • पेशवा	**155**
22.	**मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन** • मध्यकालीन भारत में दर्शन • भक्ति आंदोलन • सूफीवाद • सिख धर्म • भारत के लिए महत्वपूर्ण विदेशी यात्री	**167**
छत्तीसगढ़ का सामाजिक परीदृश्य		
1.	आदिवासी सामाजिक संगठन	**183**
2.	जनजातीय विकास	**189**
3.	संवैधानिक प्रावधान	**192**
4.	छत्तीसगढ़ जनजाति	**195**
5.	जनजातीय समस्याएँ	**206**
6.	छत्तीसगढ़ के कला रूप	**211**
7.	छत्तीसगढ़ की भाषाएँ, साहित्य	**214**
8.	लोकगीत, लोक कथाएँ और लोक महापुरूष	**220**
9.	साहित्यिक, संगीत और कला संस्थान	**225**
10.	छत्तीसगढ़ के पुरुस्कार	**227**
11.	मेलें और त्योहार	**229**
12.	पुरातत्व एवं पर्यटन स्थल	**234**
13.	बस्तर के झरने और गुफाएँ	**242**
14.	छत्तीसगढ़ के प्रमुख संत	**244**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

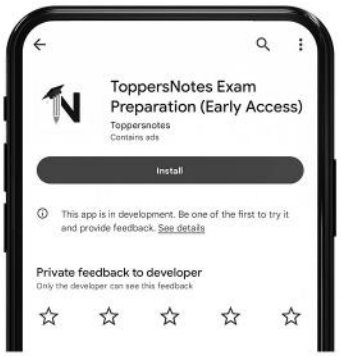

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

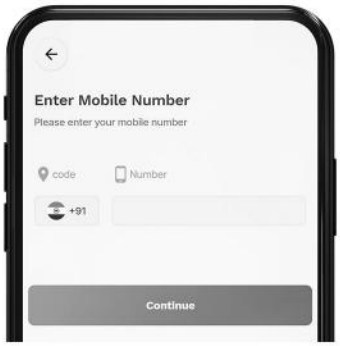

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

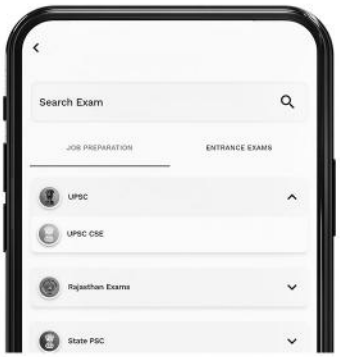

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

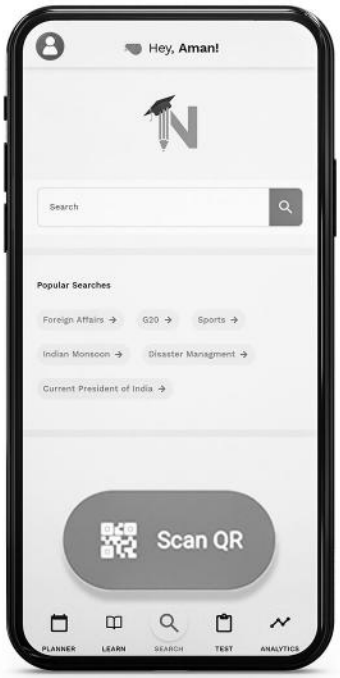

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

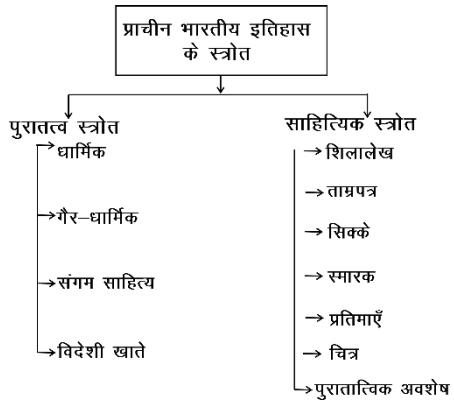

A. पुरातत्व स्रोत

- **मुद्राशास्त्र** - सिक्कों का अध्ययन।
- **पुरालेख**- अभिलेखों का अध्ययन।
- **पुरातत्व** = 'पुरालेख' + 'लोगिया' (पुरातन = प्राचीन और लोगिया = ज्ञान)।

1. शिलालेख / एपिग्राफ

- पुरातत्व स्रोतों का **सबसे महत्वपूर्ण, प्रामाणिक और विश्वसनीय हिस्सा।** तुलनात्मक रूप से कम पक्षपाती।
- **सबसे पुराने शिलालेख** - सम्राट अशोक- प्रमुख रूप से **ब्राह्मी लिपि में**।
- **अन्य महत्वपूर्ण शिलालेख –**

नाम	स्थान	वर्णन
नागनिका का शिलालेख	नानेघाट, **महाराष्ट्र**	सातवाहन राजा **सतकर्णी के बारे में**
नासिक शिलालेख	नासिक गुफाएँ, **महाराष्ट्र**	गौतमीपुत्र **सतकर्णी के बारे में**
प्रयाग प्रशस्ति/इलाहाबाद स्तंभ	इलाहाबाद, **उत्तर प्रदेश**	**समुद्रगुप्त के बारे में** हरिसेन द्वारा संस्कृत में लिखा गया
ऐहोल शिलालेख	**कर्नाटक**	बादामी के **चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय** के बारे में रविकीर्ति द्वारा लिखा गया।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरि, **ओडिशा**	**राजा खारवेल** के बारे में

2. ताम्र - पत्र

- **'भूमि-अनुदान' के लिए उत्कीर्ण** और अनुदानग्राही को जारी किया गया।
- **ताँबे की** 3 **प्लेटें**, ताँबे की गाँठ के माध्यम से एक-दूसरे से बंधी हुई।
- **ऊपरी और अंतिम भागों को उकेरा नहीं गया है** क्योंकि ये समय के साथ धुंधले हो जाते हैं।
- उस काल की **सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी** देता है।
- **उदा**. सोहगौरा ताम्रलेख हमें गंभीर सूखे और भोजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए अधिकारियों द्वारा किए गए उपायों के बारे में सूचित करता है।

3. सिक्के

- **व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों** और **आर्थिक और तकनीकी विकास** के बारे में सूचित करता है।
- उल्लिखित तिथियाँ हमें **राजाओं के कालक्रम** के बारे में जानने में मदद करती हैं।
- **भारत के पहले सिक्के** - **'पंचमार्क** सिक्के' आहत / पंचिंग विधि से बनाए गए।
- **संभवतः व्यापारिक संघों द्वारा** चलाए गए थे - किसी **शासक द्वारा नहीं।**
- **सिक्कों** में **शुद्धता** का अनुपात **शासक की आर्थिक स्थिति** और उसके समय की व्याख्या करता है।
- **पहला सोने का सिक्का** - **इंडो-यूनानियों द्वारा** जारी किया गया ।
- **कुषाणों** द्वारा **शुद्धतम सोने के सिक्के** जारी किये गए ।
- **सबसे** ज्यादा लेकिन **अशुद्ध सोने** के **सिक्के गुप्तों द्वारा** जारी किये गए।

4. स्मारक

- इनका अध्ययन हमें **तकनीकी कौशल, जीवन स्तर, आर्थिक स्थिति** और उस **समय की स्थापत्य** शैली की **व्याख्या** करने में मदद **करता है।**
- **शासको** या **राजवंशो** की **समृद्धि का चित्रण** करता है।
- **3 प्रमुख शैलियाँ-**
  - उत्तर में **नागर शैली**।
  - दक्षिण में **द्रविड़ शैली**।
  - दक्कन में **वेसर शैली**।

5. प्रतिमाएँ

- **हड़प्पा मूर्तिकला -** पत्थर, स्टीटाइट, मिट्टी, टेराकोटा, चूना, कांसे, हाथी दांत, लकड़ी आदि से बनी ।
  - **उपयोग** - मूर्तियाँ, खिलौने, मनोरंजन ।
- **कांस्य प्रतिमाएँ** (हड़प्पा सभ्यता) और **खिलौने** (दैमाबाद)
- **मौर्यकालीन मूर्तियाँ** - **दीदारगंज** की **यक्षी** - लोगों की समसामयिक संपन्नता और सौन्दर्य बोध।
- **कनिष्क की मूर्ति**- राजा की **विदेशी उत्पत्ति** और **विदेशी** शैली की **पोशाक**, जैसे जूते, ओवरकोट आदि।

6. चित्र

- **चित्रों के प्रारंभिक उदाहरण**- **भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) - मध्य पाषाण काल के गुफा-निवासियों द्वारा आसपास की प्रकृति के रंगों और औजारों का उपयोग करके बनाए गए ।
- **अजंता चित्रकला** - धार्मिक विचारधारा, आध्यात्मिक शांति, आभूषण, वेशभूषा, विदेशी आगंतुकों आदि के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **चोल चित्रकला** - **चोल राजव्यवस्था** के **'दिव्य राजत्व' की अवधारणा** को प्रदर्शित करती हैं।

7. पुरातत्व अवशेष

(i) मृदभांड

- **आद्य-इतिहास से प्रारंभिक मध्य काल** तक मुख्य उपकरण।
- **विभिन्न वस्तुओं से बने** जैसे कटोरे, प्लेट, बर्तन आदि में।
- **संस्कृति**, **आकार**, **वस्त्र**, **सतह-उपचार** (वस्त्र, रंग, डिजाइन, पेंटिंग), मृदभांड बनाने की **तकनीक** आदि के **अनुसार विभेदित।**
- **विशिष्ट संस्कृति**/अवधि के लिए **विशिष्ट मृदभांड** समर्पित किये गए है।

(ii) मणिकाएँ

- **विभिन्न सामग्रियों**, जैसे, पत्थर, अर्द्ध-कीमती पत्थर (जैसे एगेट, कैल्सेडनी, क्रिस्टल, फ़िरोज़ा, लैपिस-लाजुली), कांच, टेरा कोटा, हाथीदांत, खोल, धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि **से बने** ।
- **विभिन्न आकार** जैसे गोल, चौकोर, बेलनाकार, बैरल के आकार **के** ।
- एक **विशिष्ट अवधि** के **तकनीकी विकास** और **सौंदर्यबोध** को जानने **के लिए एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल** किए जा सकते हैं।

(iii) जीव अवशेष/हड्डियाँ

- **उत्खनन** से **बड़ी मात्रा** में **हड्डियों** या **जीवों अवशेषों** का पता चला है।
- वे उस **विशेष स्थल के आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रकाश** डालते हैं।
- **संबंधित लोगों** की **आहार संबंधी आदतों को समझने में मदद** करते हैं।

(iv) पुष्प अवशेष

- **संबंधित लोगों** की **ऐतिहासिक पारिस्थितिकी** और **आहार संबंधी आदतों** के बारे में **जानकारी** देते हैं।

B. साहित्यिक स्रोत

1. धार्मिक स्रोत

- **आधार स्रोत**: ब्राह्मण ग्रंथ जैसे वैदिक ग्रंथ, सूत्र, स्मृति, पुराण और महाकाव्य।

वैदिक ग्रंथ	• **ऋग्वेद**- **सबसे पुराना** - हमें ऋग्वैदिक समाज के बारे में बताता है। • **साम वेद**, **यजुर्वेद** और **अथर्ववेद** - **उत्तर वैदिक काल** के समाज **के बारे में** जानकारी देता है। • **900 साल** (**1500B.C-600B.C) का इतिहास** बनाता है । • **आर्यों** की उत्पत्ति, उनकी राजनीतिक संरचना, उनके समाज, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक उपलब्धियों आदि **के बारे में जानकारी देता है**।
सूत्र	• सूत्र में पिरोए गए सुन्दर मोतियों की तरह **शब्द या स्तोत्र का संकलन**। • **वैदिक काल की जानकारी** देता है। • **छह भाग**: शिक्षा, व्याकरण, छंद, कल्प, निरुक्त और ज्योतिष
उपवेद	• **आयुर्वेद** - चिकित्सा विज्ञान से संबंधित - ऋग्वेद का उपवेद। • **गंधर्व वेद** - संगीत से संबंधित- सामवेद का उपवेद। • **धनुर वेद** - युद्ध कौशल, हथियार और गोला-बारूद से संबंधित- यजुर्वेद का उपवेद। • **शिल्प वेद** - मूर्तिकला और वास्तुकला से संबंधित - अथर्ववेद का उपवेद।

स्मृति ग्रंथ	• **मनुस्मृति** - सबसे पुराना स्मृति पाठ (200B.C- 200A.D)। • **याज्ञवल्क्य स्मृति** (100A.D - 300A.D) के बीच संकलित। • **नारद स्मृति** (300A.D-400A.D) और **पाराशर स्मृति** (300A.D-500A.D) - गुप्तों की सामाजिक और धार्मिक स्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
बौद्ध साहित्य	• **पिटक** - **सबसे पुराने** बौद्ध ग्रंथ। ○ भगवान **बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद** संकलित। ○ **3 प्रकार**- ■ **सुत्त पिटक**- धार्मिक विचारधारा और बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। ■ **विनय पिटक**- बौद्ध संघ के नियम शामिल हैं। ■ **अभिधम्म पिटक**- बौद्ध दर्शन शामिल हैं। • **जातक कथाएँ** - भगवान **बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित उपाख्यान** - संकलन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ था लेकिन वर्तमान रूप दूसरी शताब्दी ईस्वी में संकलित किया गया था। • **मिलिंदपन्हो** - बौद्ध ग्रंथ - ग्रीक शासक **मिनांडर** (**मिलिन्द**) **और बौद्ध संत नागसेना के बीच दार्शनिक संवाद** के बारे में जानकारी देता है। • **दिव्यावदान** - **चौथी शताब्दी ईस्वी** में पूर्ण रूप से लिखा गया - **विभिन्न शासकों** के बारे में जानकारी। • **आर्यमंजुश्रीमुलकल्प** - बौद्ध दृष्टिकोण से **गुप्त साम्राज्य के विभिन्न शासकों के बारे में** जानकारी। • **अंगुत्तरनिकाय** - **सोलह महाजनपदों के नाम** देता है।
सिंहली ग्रंथ	• इसमें **दीपवंश** और **महावंश** - बौद्ध ग्रंथ शामिल हैं। • **दीपवंश** – 4वी शताब्दी ई. • **महावंश** - 5वीं शताब्दी ई. • उस समय के **सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी** प्रदान करता है। • **भारत और विदेशी राज्यों के सांस्कृतिक संबंधों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
जैन ग्रंथ	• **मुख्य ग्रंथ**- आगम ग्रंथ। • **कुल ग्रंथ**- 12 । • **आचारंगसूत्र** - आगम ग्रंथ का हिस्सा - **महावीर की शिक्षाओं** पर आधारित है और जैन संतों के आचरण के बारे में बात करता है। • **व्याख्या प्रज्ञापति / भगवती सूत्र** - **महावीर के जीवन** के बारे में । • **नयाधम्मकहा** - भगवान **महावीर की शिक्षाओं** का संकलन। • **भगवतीसूत्र** - 16 **महाजनपदों के बारे में** जानकारी प्रदान करता है। • **भद्रबाहुचरित** - जैन आचार्य **भद्रबाहु** और **चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर प्रकाश** डालता है। • **परिशिष्टपर्वन** - सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ - **हेमचंद्र द्वारा** 12 **वीं शताब्दी ईस्वी** में लिखा गया।
पुराण	• **स्मृति के बाद संकलित।** • मुख्य रूप से 18 । • **प्राचीन पुराण** - मार्कंडेय पुराण, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण। • **बाकी बाद में बनाए गए थे।** • **मत्स्य**, **वायु** और **विष्णु पुराणों** में प्राचीन **भारतीय राजवंशों की जानकारी** मिलती हैं । • **महाभारत के युद्ध के बाद** शासन करने वाले राजवंशों **का एकमात्र उपलब्ध स्रोत।** • **विभिन्न राजवंशों** और **उनके पदानुक्रम** (निम्नतम से उच्चतम तक) **का कालक्रम** प्रदान करता है**।**
महाकाव्य	• **ब्राह्मण ग्रंथों** का एक **हिस्सा** • **सबसे महत्वपूर्ण**- **महाभारत** और **रामायण।** • **रामायण** - **वाल्मीकि** द्वारा रचित - मौर्य काल के बाद। • **महाभारत** - **वेद व्यास** द्वारा रचित - गुप्त काल में पूरा हुआ - **शुरू में** नाम **जय संहिता / भारत** रखा गया।

2. गैर-धार्मिक स्त्रोत

- **समाज के** लगभग सभी **पहलुओं पर प्रकाश** डालता है ।
- **कुछ गैर-धार्मिक ग्रंथ** हैं -
  - **पाणिनि की अष्टाध्यायी** - भारत का **सबसे पुराना व्याकरण**/साहित्य - **मौर्य-पूर्व** काल की राजनीतिक**,** सामाजिक और धार्मिक **स्थिति की जानकारी।**
  - **मुद्राराक्षस**- **विशाखदत्त** द्वारा लिखित- **मौर्य काल के बारे में** जानकारी प्रदान करता है।
  - **अर्थशास्त्र** - **कौटिल्य** / विष्णुगुप्त / चाणक्य द्वारा लिखित - 15 **भागों में विभाजित** - भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, मौर्य युग की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

- **पतंजलि का महाभाष्य** और **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम** - **'शुंग वंश'** के बारे में जानकारी।
- **वात्स्यायन का कामसूत्र** - सामाजिक जीवन, शारीरिक संबंध, पारिवारिक जीवन आदि की जानकारी प्रदान करता है।
- **शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्'** और **दण्डिन का 'दशकुमारचरित'** - उस काल के सामाजिक जीवन की जानकारी प्रदान करता है।

3. संगम साहित्य

- **प्राचीनतम दक्षिण भारतीय साहित्य**।
- **इकट्ठे हुए कवियों द्वारा** निर्मित (संगम)।
- **डेल्टाई तमिलनाडु** में रहने वाले लोगों के **सामाजिक**, **आर्थिक** और **राजनीतिक जीवन के बारे में** बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- इसमें **'सिलप्पादिकारम'** और **'मणिमेकलई' शामिल** हैं।

संगम साहित्य

संगम साहित्य	लेखक	विषय / प्रकृति / संकेत
अगत्तीयम	अगस्त्य	अक्षरों के व्याकरण पर एक कार्य
तोल्काप्पियम (तमिल व्याकरण)	तोलकापिय्यार	व्याकरण और कविता पर एक ग्रंथ
एट्टुकाई	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पट्टुपट्टू	-	मेलकन्नक्कू संयुक्त रूप
पेटिनेंकिलकनक्कू (18 लघु कार्य)	-	एक उपदेशात्मक कार्य
कुरल (मुप्पाल)	तिरुवल्लुवर	राजनीति, नैतिकता, सामाजिक मानदंडों पर एक ग्रंथ
शिलप्पादिकारम	इलांगो आदिगल	कोवलन और माधवी की एक प्रेम कहानी
मणिमेकलई	सीतलै सत्तनार	मणिमेकलई का साहसिक कार्य
सिवाका चिंतामणि	तिरुत्तकरदेव	एक संस्कृत ग्रंथ
भारतम	पेरुदेवनार	अंतिम महाकाव्य
पन्निरुपदलम (व्याकरण)	अगस्त्य के 12 शिष्य	पुरम साहित्य पर एक व्याकरणिक कार्य

4. विदेशी खाते

- **ग्रीक**, **रोमन**, **चीनी** और **अरब यात्रियों** के लेखन से मिलकर बने है।
- **राजनीतिक** और **सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश** डालते है।
- **ग्रीक या रोमन लेखक -**
  - **हेरोडोटस**-
    - **विश्व के प्रथम इतिहासकार** माने जाते हैं।
    - **फारसियों की तरफ से लड़ने वाले भारतीय सैनिकों का उल्लेख** किया।
  - **मेगस्थनीज**-
    - **सेल्यूकस निकेटर के राजदूत,** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में तैनात।
    - **कार्य** - **इंडिका** - **पाटलिपुत्र** के नक्शे **का विवरण** देता है।
    - **सामाजिक संरचना**, **जाति-व्यवस्था**, **जाति-संबंध** आदि के ऊपर **उल्लेख।**
    - मूल इंडिका खो गई है।
  - **एरिथ्रियन सागर का पेरिप्लस**-
    - इसे कथित तौर पर **मिस्र के तट पर** एक **मछुआरे ने लिखा** था।
    - **प्रारंभिक ऐतिहासिक काल** के दौरान **भारत-रोमन व्यापार** पर निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ **जानकारी** देता है।
    - **भारत के तट-रेखा पर बंदरगाहों**, **भारत** में **व्यापार केंद्रों, व्यापार-मार्गों** और बंदरगाहों को जोड़ने, **केंद्रों के बीच** की **दूरी**, **व्यापार** की **वस्तुओं**, **व्यापार** की वार्षिक **मात्रा**, **जहाजों के प्रकार** आदि **के बारे में** सूचित करता है।
- **चीन**
  - **फाह्यान** (**फा जियान**)-
    - **गुप्त काल के दौरान** भारत आए।
    - **बौद्ध भिक्षु** - देवभूमि (अर्थात् भारत) से ज्ञान प्राप्त करने और बौद्ध तीर्थ केन्द्रों का दौरा करने के लिए भारत आए।
  - **ह्वेनसांग** (**जुआन जांग**)-
    - **हर्षवर्धन के** शासनकाल के **दौरान** भारत का दौरा किया।
    - **बौद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण** किया, **नालंदा विश्वविद्यालय में ठहरे।**
    - **बौद्ध धर्म का अध्ययन किया**, मूल बौद्ध रचनाएँ पढ़ीं, मूल पांडुलिपियाँ और स्मृति चिन्ह एकत्र किए, प्रतियां बनाईं, **हर्ष की सभा में भाग लिया**।
    - चीन में, **उन्होंने 'सी-यू-की'** (पश्चिमी क्षेत्रों पर ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स) **लिखा** - भारत में उनके अनुभव का विशद विवरण डेटा हैं।
    - **राजाओं विशेष रूप से हर्ष** और उनकी उदारता, भारत में लोगों और विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाजों, जीवन शैली आदि **की जानकारी** देता है।
- **अन्य क्रॉनिकल्स -**
  - **तारानाथ** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु) द्वारा **कंग्यूर** और **तंग्यूर** - **प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का लेखा-जोख**

2 CHAPTER पाषाण युग

- **प्रागैतिहासिक काल** - **कोई लिखित प्रमाण नहीं।**
- **सूचना का मुख्य स्रोत**- पुरातात्विक उत्खनन।
- **पल्लवरम हैंडैक्स** - भारत में **पहला पुरापाषाण उपकरण** - रॉबर्ट ब्रूस फूट (1863 ईस्वी) द्वारा खोजा गया - उन्होंने दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में पूर्व-ऐतिहासिक स्थलों की भी खोज की ।
- यह काल **मानव सभ्यता का प्रारम्भिक काल** माना जाता है।
- इस काल को **तीन भागों में विभाजित** किया जा सकता है
  1. **पुरा पाषाण काल** (Paleolithic Age)
  2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age)
  3. **नव पाषाण काल** अथवा उत्तर पाषाण काल (Neolithic Age)

1. पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)

- यूनानी भाषा में Palaios प्राचीन एवं Lithos पाषाण के अर्थ में प्रयुक्त होता था।
- यह काल **आखेटक एवं खाद्य-संग्रहण काल के रूप में** भी **जाना जाता** है।
- अभी तक **भारत में पुरा पाषाणकालीन मनुष्य के अवशेष** कहीं से भी **नहीं मिले हैं**, जो भी अवशेष के रूप में मिला है, वह उस समय प्रयोग में लाये जाने वाले पत्थर के उपकरण हथियार हैं।
- **प्राप्त उपकरणों के आधार पर** यह अनुमान लगाया है कि ये लगभग **2,50,000 ई.पू.** के होंगे।
- हाल में **महाराष्ट्र के 'बोरी' नामक स्थान पर की गई खुदाई में मिले अवशेषों** से ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इस पृथ्वी पर **'मनुष्य' की उपस्थिति लगभग 14 लाख वर्ष पुरानी** है।
- **गोल पत्थरों से बनाये गये प्रस्तर उपकरण** मुख्य रूप से **सोहन नदी घाटी में मिलते हैं।**
- **सामान्य पत्थरों के कोर तथा फ़्लॅक्स प्रणाली द्वारा बनाये गये** औजार मुख्य रूप से मद्रास, वर्तमान चेन्नई में पाये गये हैं।
- इन दोनों प्रणालियों से निर्मित **प्रस्तर के औजार सिंगरौली घाटी, मिर्ज़ापुर एवं बेलन घाटी, प्रयागराज में मिले** हैं।
- **मध्य प्रदेश के भोपाल के पास भीम बेटका में मिली पर्वत गुफायें** एवं शैलाश्रय भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- इस समय के मनुष्यों का जीवन **पूर्णरूप से शिकार पर निर्भर** था।
- वे **अग्नि के प्रयोग से अनभिज्ञ** थे। **सम्भवतः** इस समय के **मनुष्य नीग्रेटो जाति के थे।**
- **भारत में पुरापाषाण युग को औजार-प्रौद्योगिकी के आधार पर तीन अवस्थाओं** में **बांटा जाता हैं**-

काल	अवधि	अवस्थाएं
निम्न पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू.	हस्तकुठार और विदारण उद्योग
मध्य पुरापाषाण काल	100,000 ई.पू. 40,000 ई.पू.	शल्क (फ़्लॅक्स) से बने औज़ार
उच्च पुरापाषाण काल	40,000 ई.पू. 10,000 ई.पू.	शल्कों और फ़लकों (ब्लेड) पर बने औजार

A. निम्न पुरा पाषाण काल

- **विशेषताएं:**
  - **अधिकतम समय अवधि** (पूरे निम्न प्लीस्टोसिन और मध्य प्लीस्टोसिन युग की अधिकतम अवधि को कवर करता है)।
  - **नदी घाटियों का निर्माण** ।
  - **प्रारंभिक पुरुष जल स्त्रोत के पास रहना पसंद करते थे**, क्योंकि पत्थर के हथियार/उपकरण मुख्य रूप से नदी घाटियों में या उसके आस-पास पाए जाते हैं।
  - **मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप** और **अफ्रीका में** फैला हुआ ।
  - **प्रारंभिक पत्थर के औजारों के साक्ष्य** - पश्चिमी यूरोप - निम्न प्लीस्टोसिन में पहले अंतर-हिमनद चरण के निक्षेप ।
  - **खानाबदोश जीवन** शैली जीते थे।
  - **शिकारी** और भोजन **संग्रहकर्ता।**
  - **निएंडरथल** जैसे पैलेंथ्रोपिक पुरुषों का योगदान (होमिनिड/मानवनुमा विकास का तीसरा चरण)
  - **सबसे पुराने निम्न पुरापाषाण स्थलों** में से एक **महाराष्ट्र में बोरी** है।
- **उपकरण:**
  - **उपकरण**- **चूना पत्थर से बने** - हाथ की कुल्हाड़ी, चॉपर और क्लीवर - खुरदरे और भारी।
  - **पहले पाषाण औजारों के निर्माण** को ओल्डोवन परंपरा के रूप में जाना जाता था।

- **प्रमुख स्थल:**
  - सोन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
  - थार रेगिस्तान
  - कश्मीर
  - मेवाड़ का मैदान
  - सौराष्ट्र
  - गुजरात
  - मध्य भारत
  - दक्कन का पठार
  - छोटानागपुर पठार
  - कावेरी नदी का उत्तरी भाग
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी

दो महत्वपूर्ण संस्कृतियां -

- **सोहन संस्कृति:**
  - **सिंधु की** एक **सहायक नदी सोहन** नदी के नाम **पर**।
  - **स्थल**-उत्तर-पश्चिम भारत और पाकिस्तान में शिवालिक पहाड़ियाँ।
  - **निम्न पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार** मिले।
  - **पशु अवशेष** - घोड़ा, भैंस, सीधे दांत वाला हाथी और दरियाई घोड़ा।
  - **कंकड़ उपकरण** और **चॉपर के निक्षेप** मिले।
- **एचुलियन संस्कृति / मद्रासी संस्कृति:**
  - **फ्रांसिसी स्थल सेंट अचेउल के नाम पर।**
  - **भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेशीकरण।**
  - **भारत** में **निम्न पुरापाषाणकालीन बस्तियों के समान।**
  - **हैण्ड-एक्स** और **क्लीवर के भंडार**

B. मध्य पुरापाषाण काल

- **विशेषताएं-**
  - मुख्य रूप से **मनुष्य के प्रारंभिक रूप- निएंडरथल से जुड़ा हुआ** है।
  - **आग के उपयोग के साक्ष्य।**
  - **मध्य पुरापाषाण काल** का **मनुष्य मेहतर** था, लेकिन **शिकार** और **संग्रहण के बहुत कम साक्ष्य** मिले हैं।
  - **दफनाने से पहले मृतकों को चित्रित** किया जाता था।
  - कुछ उपकरण प्रकारों का त्याग कर और उपकरण निर्माण की नई तकनीकों को शामिल करके **ऐचुलियन संस्कृति में धीमा परिवर्तन हुआ।**
- **उपकरण -**
  - **छोटे, पतले और हल्के उपकरण।**
  - **मुख्य रूप से** बोर, पॉइंट और स्क्रेपर्स आदि बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले **फलैक्स पर निर्भर।**
  - **इस अवधि में कंकड़ उद्योग भी देखा जा सकता है।**
  - खोजे गए पत्थर बहुत छोटे / **सूक्ष्म पाषाण** थे।
  - **क्वार्टजाइट**, **क्वार्ट्ज** और **बेसाल्ट** की जगह **चर्ट** और **जैस्पर** जैसे महीन दाने वाली सिलिकाम शैलों ने ले ली।
  - **मध्य भारत और राजस्थान में कई जगहों पर** टूल फैक्ट्रियाँ **पाई जाती है**।
  - इस युग की **अधिकांश विशेषताएं निम्न पुरापाषाण काल के समान** हैं ।
- **महत्वपूर्ण स्थल:**
  - उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी
  - लूनी घाटी (राजस्थान)
  - सोन और नर्मदा नदियाँ
  - भीमबेटका
  - तुंगभद्रा नदी घाटियाँ
  - पोटवार पठार (सिंधु और झेलम के बीच)
  - संघो गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

C. उच्च पुरापाषाण काल

- **विशेषताएँ** -
  - **होमो सेपियन्स की उपस्थिति।**
  - **कला** और **रीति-रिवाजों को दर्शाने वाली मूर्तियों** और **अन्य कलाकृतियों की** व्यापक **उपस्थिति।**
  - **राजस्थान**, **मध्य प्रदेश** और **महाराष्ट्र** में **40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्को की खोज**
  - **ऊंचाई** पर और **उत्तरी अक्षांशों में अत्यधिक ठंडी** और **शुष्क जलवायु।**
  - **उत्तर पश्चिम भारत** में **मरुस्थलों का व्यापक निर्माण**
  - **पश्चिमी भारत के जल** अपवाह तंत्र लगभग खत्म हो गए और नदी के **जलमार्ग** "पश्चिम की ओर" स्थानांतरित हो गए।
  - **वनस्पति आवरण** में **कमी।**

    मानव आबादी को जंगली खाद्य संसाधनों का सामना करना पड़ा- यही कारण है कि ऊपरी पुरापाषाण स्थल शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में बहुत सीमित हैं।

- **उपकरण** -
  - **हड्डी के औज़ार** - सुई, मछली पकड़ने के उपकरण, हार्पून, ब्लेड और बरिन उपकरण।
  - **तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण** के संबंध में एक चिह्नित क्षेत्रीय विविधता देखने को मिली।
  - **ग्राइंडिंग स्टैब्स** भी पाए - उपकरण उत्पादन की तकनीक में प्रगति।
- **प्रमुख स्थल:**
  - भीमबेटका (भोपाल के दक्षिण में) - हाथ की कुल्हाड़ी और क्लीवर, ब्लेड, खुरचनी यहाँ पाए गए हैं।
  - बेलन
  - सोन
  - छोटा नागपुर पठार (बिहार)
  - महाराष्ट्र
  - ओडिशा
  - आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
  - अस्थि औज़ार केवल आंध्र प्रदेश में कुरनूल और मुच्छतला चिंतामणि गवी की गुफा स्थलों पर पाए गए है

2. मध्य पाषाण काल (Middle Stone Age)

- **ग्रीक शब्दों से व्युत्पन्न - 'मेसो' और 'लिथिक'** उर्फ 'मध्य पाषाण युग'।
- **यह होलोसीन युग** से सम्बन्धित ।
- **पैलियोलिथिक** और **नवपाषाण काल के बीच संक्रमणकालीन अवधि** ।
- **विशेषताएँ -**
  - गर्मियों में भारी वर्षा और सर्दियों में मध्यम वर्षा वाली **गर्म जलवायु**।
  - शुरू में **शिकारी** और **संग्रहणकर्ता** , लेकिन **बाद में पशुपालन** और **खेती** करने लगे ।
  - **आदिम खेती** और **बागवानी शुरू** हुई।
  - **पालतू** बनाने वाला **पहला जानवर** - **कुत्ते** का **जंगली पूर्वज।**
  - **भेड़** और **बकरियां**- **सबसे आम पालतू** जानवर।
  - **लोग गुफाओं** और **खुले मैदानों** के साथ-साथ **अर्द्ध-स्थायी बस्तियों में रहते थे**।
  - **लोग परलोक में विश्वास करते थे** और इसलिए मृतकों को खाद्य पदार्थों और अन्य सामानों के साथ दफनाते थे ।
  - **लोग जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनने लगे।**
  - इस अवधि में **गंगा के मैदानों का पहला मानव उपनिवेश स्थापित** हुआ ।
  - **अंतिम चरण** - खेती की शुरुआत
- **औजार** - **सूक्ष्म पाषाण -**
  - **ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों** में गूढ़-क्रिस्टली सिलिका, कैल्सेडनी या चर्ट से बने ।
  - **मिश्रित औजार**, **भाला**, **तीर** और **दरांती** बनाने **के लिए उपयोग** ।
  - ये **औजार छोटे जानवरों** और **पक्षियों का शिकार** करने में सक्षम बनाते थे।
- **चित्र -**
  - **कला प्रेमी** और **इतिहास** में **रॉक कला/ शैल चित्रकला की स्थापना** की।
  - **भारत में पहली शैल चित्र** - 1867 में सोहागीघाट (उत्तर प्रदेश) में मिली।
  - **विषयवस्तु**- जंगली जानवर और शिकार के दृश्य, नृत्य और भोजन संग्रह।
  - **चित्रकला में ज्यादातर लाल गेरू** लेकिन कभी-कभी **नीले-हरे, पीले या सफेद रंगों का इस्तेमा**ल किया गया है।
  - **सांपों का** कोई **चित्रण नहीं**।
  - **भीमबेटका शैल चित्र धार्मिक प्रथाओं** के विकास **के बारे में** एक अंदाजा देते हैं और लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को भी दर्शाते हैं। पुरुषों को शिकार करते हुए दिखाया गया है जबकि महिलाओं को संग्रहण करते और खाना बनाते हुए दिखाया गया है।
- **महत्वपूर्ण स्थल** -
  - **बागोर (राजस्थान)-**
    - **भारत में सबसे बड़ा और सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित मध्यपाषाण स्थलों** में से एक।
    - कोठारी नदी पर।
    - **पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण।**
  - **महादहा, दमदमा, सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) -**
    - **मानव कंकाल** के साक्ष्य।
    - **महादहा में**, एक **पुरुष** और एक **महिला को** एक **साथ दफनाया** गया था।
    - एक कब्रगाह में **कब्र देवता** के रूप में एक **हाथीदांत का पेंडेंट** पाया गया।
  - **भारत भर में मध्यपाषाण शैल चित्र स्थल-**
    - मध्य भारत जैसे भीमबेटका गुफाएं, खारवार, जौरा और कठोटिया (एमपी), सुंदरगढ़
    - संबलपुर (ओडिशा)
    - एजुथु गुहा (केरल)।
  - **लंघनाज (गुजरात) और बिहारनपुर (पश्चिम बंगाल)-**
    - लंघनाज- जंगली जानवरों (गैंडा, काला हिरण आदि) की हड्डियाँ।
    - कई मानव कंकाल
    - बड़ी संख्या में सूक्ष्म पाषण

छत्तीसगढ़ का सामाजिक पहलू

छत्तीसगढ़ का सामाजिक पहलू

छत्तीसगढ़ आदिवासी सामाजिक संगठन : विवाह, परिवार, कबीले, युवा छात्रावास

आदिवासी सामाजिक संगठन : विवाह, परिवार, कबीले, युवा छात्रावास
नृवंशविज्ञान प्रोफ़ाइल

- मानवशास्त्रीय रूप से, एक जनजाति एक सामाजिक समूह है जहां सदस्य एक सामान्य क्षेत्र में रहते हैं और एक समान बोली, वर्दी, सामाजिक संगठन रखते हैं और सांस्कृतिक एकरूपता और एक सामान्य पूर्वज बनाए रखते हैं। लेकिन इन विशेषताओं के अनुसार, भारत में ऐसे कई आदिवासी समूहों का पता लगाना बहुत मुश्किल होगा, जिनके पास ये सभी विशेषताएं हैं।
- इस प्रकार, भारत की जनजातियों में पाई जाने वाली विशेषताओं के आधार पर, उनके नस्लीय तत्वों को विभिन्न मानवविज्ञानी द्वारा समझाया गया है।

एच. रिस्ले ने भारत में अपने प्रमुख नस्लीय प्रकारों को मान्यता दी। वे :
1. द्रविड़ियन
2. इंडो–आर्यन

उन्होंने मानवशास्त्रीय डेटा के आधार पर निम्नलिखित सात समूहों में वर्गीकृत किया :
1. तुर्क–ईरानी।
2. इंडो–आर्यन।
3. सीथो–द्रविड़ियन।
4. आर्य–द्रविड़ियन।
5. मंगोल–द्रविड़ियन
6. मंगोलॉयड

- यदि हम छत्तीसगढ़ के आदिवासी समूहों को देखें, खासकर बस्तर क्षेत्र में, तो वे द्रविड़ नस्लीय समूह के अंतर्गत आते हैं। नृवंशविज्ञान एक संस्कृति या संस्कृति साझा करने वाले लोगों के समूह का गहन विवरण है।
- यह एक आचरण में लोगों का अध्ययन है, उस समूह की संस्कृति में डूबे हुए लोगों के समूह का विस्तृत अध्ययन है। नृवंशविज्ञान (एथनो, लोग या लोक और ग्राफी, किसी चीज़ का वर्णन करने के लिए) को कभी–कभी प्रतिभागी अवलोकन या क्षेत्र अनुसंधान के रूप में संदर्भित किया जाता है जिसमें सामाजिक सेटिंग के वास्तविक जीवन में आमने–सामने बातचीत के माध्यम से लोगों या संगठन का अध्ययन शामिल होता है। अनुसरण करने के लिए कोई निगमनात्मक परिकल्पना या कोई सांख्यिकीय सूत्र नहीं है।
- समय के साथ, यह बातचीत एक सामाजिक घटना की संस्कृति, इतिहास और विशेषताओं का एक समृद्ध और विस्तृत विवरण देती है। नृवंशविज्ञान वैश्विक संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाता है और नृवंशविज्ञान संबंधी विचारों और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को कम करता है।

छत्तीसगढ़ की अभुज मारिया या हिल मारिया जनजाति

- अभुज मारिया बस्तर क्षेत्र की अज्ञात पहाड़ियों (अभुज = अज्ञात और मढ़ = पहाड़ी) में रह रहे हैं। ये लोग गोंड की उप–जनजाति में से एक हैं।
- इस क्षेत्र के आदिवासी लोगों को उनके सामान्य नाम गोंड के आधार पर वर्गीकृत किया गया है और वे हमारे मानव समाज के विकास के कुछ आदिम चरणों और स्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे ज्यादातर बस्तर जिले के नारायणपुर तहसील के ओरछा ब्लॉक और दंतेवाड़ा जिले के कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं।

- वे अलगाव में रहते हैं, उन्हें बाहरी दुनिया से दूर रखते हैं और एक विविध जीवन जीते हैं। उनकी पारंपरिक संस्कृति, नैतिक जीवन मूल्य और सामाजिक सुरक्षा अभी तक भंग नहीं हुई है।
- वे छत्तीसगढ़ में अलगाव में रहने वाले भारत के दुर्लभ आदिवासी समूहों में से एक हैं। वे भारत की सभी जंगली जनजातियों में सबसे शक्तिशाली हैं। यह स्पष्ट है कि हिल मारिया अपने आवास और कृषि पद्धतियों के कारण मुरिया से अलग थी। वे भारत की अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक आदिम हैं।

निपटान पैटर्न

- हिल मारिया गांव के प्रवेश द्वार के पास झोपड़ियों के एक समूह में अलग रहती है। इन झोपड़ियों को घोटुल भी कहा जाता है, वही नाम जो मुरिया अपने युवा शयनगृह के लिए उपयोग करते हैं।
- अंतर यह है कि ये घोटुल युवतियों के लिए कतई नहीं हैं। यह आवास गृह है।
- गाँवों में घरों का निर्माण दो समानांतर पंक्तियों में एक विस्तृत स्थान के साथ किया जाता है।
- कुछ गांवों में, कोई यह देख सकता है कि वे अपने घरों को शयनगृह के रूप में उपयोग करते हैं।
- प्रत्येक गांव में 15 से 20 घर होते हैं

भाषा

- गोंडी, गोंड की जनजातीय भाषा है। गोंड की उप–जनजातियों में कुछ अंतर हैं। लिखित रूप में गोंडी का कोई स्वदेशी साहित्य नहीं है।
- हालांकि, शोधकर्ताओं ने उनके भाषण के आधार पर हिल मारिया और बाइसन हॉर्न मारिया की बोली को विभाजित किया है।

परिवार संरचना

- परिवार हिल मारिया समाज की सबसे छोटी इकाई है। परिवार एक ही अधिवास में रहता है। परिवार की प्रकृति वैवाहिक है क्योंकि इसमें पति, पत्नी और उनके बच्चे होते हैं; एक घर में सबसे बड़ा पुरुष सामाजिक आर्थिक जीवन के सभी क्षेत्रों में अंतिम अधिकार रखता है। उनके कुल (काटा) एक अरेखीय वंश समूह हैं।
- कबीले के सभी सदस्य मानते हैं कि वे एक सामान्य पूर्वज के वंशज हैं। प्रत्येक पहाड़ी मारिया गाँव में, एक प्रमुख कबीला होता है जैसे उसेंडी कहा जाता है।
- विभिन्न कुलों के समूह को भाईबंद या दादाभाई (भाई कबीला) कहा जाता है।
- भाईबंद संबंध रखने वालों में वैवाहिक संबंध निषिद्ध हैं, हालांकि वे कबीले बहिर्विवाह का अभ्यास करते हैं।
- हिल मारिया को जीवन चक्र के विभिन्न चरणों के साथ संस्कार क्र–पैसेज के माध्यम से पेश किया जाता है।

शादी के रीति–रिवाज

- उन्हें अकोमा नामक पत्नी के कुल के सदस्य के साथ ही विवाह करने की अनुमति है। इसलिए, सभी कुलों में कुछ भाईबंद वंश और कुछ अकोमामा वंश होते हैं।
- वे कई कारणों से क्रॉस कजिन विवाह पसंद करते हैं जैसेरू (i) आसान समायोजन, (ii) दुल्हन की आसान उपलब्धता, और (iii) दुल्हन की कीमत के लिए कम भुगतान। दुल्हन की कीमतों का भुगतान नकद और तरह दोनों तरह से किया जाता है।
- मोनोगैमी उनका नियम है, लेकिन बहुविवाह की भी अनुमति है और उनके द्वारा अभ्यास किया जाता है। उनके समाज में लेविरेट और सोरारेट दोनों प्रकार के विवाह प्रचलित हैं। बातचीत से विवाह (पेंडुल) नियम है।

- शादी की रस्में उनके बड़ों द्वारा निभाई जाती हैं। अन्य प्रकार के विवाह हैं लम्रे (सेवा द्वारा विवाह), विट्टे (विवाह द्वारा विवाह), एओहुंडी (जूनियर लेविरेट), कोहेबरदान (विनिमय द्वारा विवाह), कोय्यारी (सॉरोरेट) और विधवा पुनर्विवाह की भी अनुमति है। स्थानीय बाजार के दिन शादी की तारीख तय होती है। कानूनी रूप से कोई तलाक नहीं है।

रिश्तेदारी

- हिल मारिया समाज प्रकृति में पितृवंशीय और पितृसत्तात्मक है। रिश्तेदारी की वर्गीकरण प्रणाली पहाड़ी मारिया के बीच देखी जाती है।
- अलग–अलग वंश संबंधी रिश्तेदारों के लिए उनकी अलग–अलग शब्दावली है। वे निम्नलिखित शब्दावली का उपयोग करते हैं।

रिश्तेदारों की शब्दावली

- अंग्रेजी नाम – स्थानीय (गोंडी)
- पिता – टप्पे
- माता – तालूग, आवा
- पुत्र – माघी
- बेटी – मियारिक
- बड़ा भाई – दादा
- बड़ी बहन – अक्का
- छोटा भाई – तमू
- छोटी बहन – हेला
- पिता के पिता – तादो
- पिता की माता
- माता के पिता–अको
- माँ की माँ – काको
- पति – कोटूर
- पत्नी – अर
- पिता का भाई–कुचि
- माता का भाई z–मामा

गाँव की आर्थिक संरचना में नातेदारी संगठन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता और पिता दोनों पक्षों के परिजन समूह विभिन्न गतिविधियों के लिए एक दूसरे का सहयोग करते हैं।

शक्ति का विभाजन

- गांव का मुखिया पहाड़ी मारिया के गांव का सबसे बुजुर्ग सदस्य होता है, जिसे परगना मांझी कहा जाता है। मुखिया घरेलू और ग्रामीण मामलों में निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार होता है। उनकी पारंपरिक परिषद परगना मांझी द्वारा निर्धारित है।
- गाँव के मुखिया दशहरा के वार्षिक उत्सव में शामिल होते थे, जब अनिवार्य रूप से देवी दंतेश्वरी और मौली की पूजा बस्तर क्षेत्र के संरक्षक देवताओं के रूप में की जाती थी।

पेशा

- हिल मारिया मुख्य रूप से पेड़ा (स्लेश एंड बर्न) काश्तकार थे। उन्होंने बसे हुए खेती के प्रारंभिक रूप का भी अभ्यास किया।
- पेड़ा भूमि में कोसरा और कोल्हा (एक प्रकार का बाजरा) मुख्य अनाज हैं। लेकिन भारत के अधिकांश क्षेत्रों में सरकार द्वारा जनजातियों पर हल की खेती के लिए मजबूर किया गया था, जो कि स्थानांतरित खेती को बेकार और जंगल के लिए हानिकारक पाया गया था। चावल उनकी खेती में प्रमुख अनाजों में से एक है।
- भूमि व्यक्तिगत परिवार के स्वामित्व में है लेकिन स्वामित्व पैटर्न आमतौर पर स्वदेशी है। कुछ जमीनें कभी–कभी किसी वंश के सदस्य या दादाभाई को दी जाती हैं जिन्हें वास्तव में जरूरत होती है।

सुविधाएं और सुविधाएं

- अन्य गोंड जनजातियों की तुलना में पहाड़ी मारिया बहुत आदिम है। वे अलग–अलग जगहों पर रहते हैं और अपने पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखते हैं और अपने आदिवासी रीति–रिवाजों का पालन करते हैं। उत्तर आधुनिक युग में उनका सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन बहुत खराब है।
- पीने के पानी की किल्लत है। उनके यहां सड़क संचार व्यवस्था खराब है। यह बिजली और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से रहित है और वे अभी भी जातीय–चिकित्सा का उपयोग कर रहे हैं, जो कि ग्राम गुनिया या बैद द्वारा प्रदान की जाती है।

पहाड़ी–कोरवा (पहाड़ी कोरवा)

- विशेषताएं – ये कोलारियन जनजाति की शाखाएं हैं और मुंडारी भाषा से संबंधित हैं। परिवार के मानवशास्त्रीय विवरण के अनुसार वे ऑस्ट्रो–एशियाई परिवार से संबंधित हैं। जनजाति में दो उप–जनजाति हैं जिन्हें पहाड़ी कोरवा और दिहारी कोरवा के नाम से जाना जाता है।
- शारीरिक रूपरू वे मध्यम से छोटी ऊंचाई के होते हैं जिनकी त्वचा गहरे भूरे या काले रंग की होती है।
- क्लेन (गोत्र)रू हिल कोरवा को पांच टोटमिस्टिक एडोगैमस क्लेंस में बांटा गया है, जैसे हंसद्वार, समर, एडिगवार, गिन्नूर और रेनला।
- कुलदेवता कबीले
  1. हज़ेदा कृबांस
  2. एडिगवार – कचमी (लता)
  3. समत – समत (एक पेड़)
  4. मधियार या मुधिकरकृदोहस सिर
  5. जिनू – चींटी–पहाड़ी मिट्टी

- गाँव – गाँव का स्थान आमतौर पर पहाड़ी की चोटी पर या जंगल से आच्छादित पर चुना जाता है। हिल–कोरवा के अधिकांश परिवार एकल थे। रिश्तेदारी प्रणाली अभी भी उनमें से कुछ सख्त संबंध वर्जित अलग रिश्तेदारों की बुनियादी उप–संरचना है। पहाड़ी–कोरवा का धर्म पुश्तैनी पूजा और कुछ देवी–देवताओं की पूजा तक ही सीमित है।
- वे जादुई प्रदर्शन से डरते हैं और उनके सामाजिक–धार्मिक जीवन में जादू की कोई भूमिका नहीं है। वे अलौकिक शक्तियों में विश्वास करते हैं।
- उनके महत्वपूर्ण देवता सिग्री देव, गौरिया देव, महादेव और पार्वती हैं और मुख्य देवता खुदिया रानी हैं।
- वे बीमारी, बेहतर फसल, सुरक्षा और प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए देवी की पूजा करते हैं। वे जादू और चुड़ैल जादूगर (चुड़ैल शिल्प, ओडका) में विश्वास करते हैं।

- पहाड़ी–कोरवा हमेशा घर के किनारे के चयन में व्यस्त रहता है। हिल–कोरवा के अधिकांश परिवार आंशिक वंशीय और पितृस्थानीय परमाणु हैं।
- भोजन–आदतः पहाड़ी–कोरवा जनजाति की आजीविका का मुख्य स्रोत साल, महुआ, गोंद, तेंदू पत्ते, आंवला, हर्रा, बहेड़ा आदि जैसे छोटे वन उत्पादों का शिकार और संग्रह है। बरसात के मौसम में वे कुछ जंगल की जड़ें, पत्ते और सब्जियां इकट्ठा करते हैं। आजकल वे साधना तो करते हैं लेकिन उनकी आदिम तकनीक। मछली पकड़ना और शिकार करना व्यवसाय के रूप में किया जाता है। हालांकि उनके पास मजदूरी के रूप में खेती के लिए कोई जमीन का काम नहीं है। कुछ मौसमों में उन्हें खाने के लिए अनाज मिलता है, जबकि विषम मौसम में वे अपनी भूख को पत्तियों, फलों, कंदों (अर्थात् गैंथ, पिथारू, नकवा, कथरू, कुल्थी, कोंगे, चरहट, बिलर) आदि पर संतुष्ट करते हैं। अक्टूबर और मार्च के बीच उन्हें मिलता है। बेहतर भोजन जिसमें मक्का मक्का शामिल है) अरुआ/मडुआ धान की मिट्टी सतुरु, कुटकी, अरहर (अरहर), और अन्य दालें आदि।
- बसावट पहाड़ी–कोरवा जनजाति का मुख्य केंद्र जशपुर, सरगुजा और रायगढ़ में है।

भात्रा जनजाति

- भात्रा गोंड की एक उप–जनजाति हैं। जगदलपुर तहसील के पूर्वी भाग में और बस्तर जिले के कोंडागांव तहसील में भात्रा बस्तियां मिल सकती हैं।
- वे उड़ीसा के नवरंगपुर और कोरापुट जिलों में भी बसे हुए हैं।
- वे भत्री बोली बोलते हैं।

आर्थिक मानदंड के आधार पर इन्हें तीन समूहों में बांटा गया है –

- (i) बद–भात्रा (ii) मजली–भात्रा (iii) संभात्र।
- ये समूह अंतर्विवाही हैं। इनमें से प्रत्येक समूह में कुकर (कुत्ता), बैग (बाघ), कुकरा (मुर्गा), नाग (सर्प), बकरा (बकरी) आदि जैसे कई बहिर्विवाह, कुलदेवता कुल हैं।

खाने की आदत

वे पेज (चावल का घी) और महुआ शराब के शौकीन हैं। वे चावल, दाल और करी तैयार करते हैं। वे अपना खाना सरसों के तेल से बनाते हैं। वे ज्यादातर शाकाहारी हैं और बीफ नहीं खाते हैं।

परिवार, विवाह और रिश्तेदारी

- परिवार की प्रकृति एकल और विस्तारित प्रकार की होती है। परिवार में पति, पत्नी और उनके बच्चे हैं। एक ही वंश के व्यक्ति को दयालु भाई के नाम से जाना जाता है।
- संबंधियों को गाथा कुटुम के रूप में जाना जाता है और भात्रा लोगों को गाथा लोक के रूप में जाना जाता है। वे एकविवाही हैं लेकिन बहुविवाह की भी अनुमति है।
- शादी का प्रस्ताव लड़के के घर से लड़की के घर में आता है। लड़के के पिता, एक महालकारी (वार्ताकार) के साथ, एक लड़की के घर जाते हैं और शादी के लिए पहुंचते हैं।
- तलाक की अनुमति है। पुरुष के मामले में पुनर्विवाह की अनुमति है।
- एक महिला दो बार शादी नहीं कर सकती। विधवा के मामले में, उसका छोटा देवर उसे बिना किसी विवाह अनुष्ठान के पत्नी के रूप में विरासत में देता है।
- वधू के घर में किया जाने वाला विवाह समारोह चलबिया के रूप में जाना जाता है और यदि यह दूल्हे के घर में किया जाता है तो इसे कनियाबिया के रूप में जाना जाता है।
- धार्मिक रूप से, भत्रों को दो समूहों जैसे जगलोक और भोगलोक में विभाजित किया गया है।

- जगलोक भात्रा अपने पारंपरिक रीति–रिवाजों का पालन करते हैं जहां भोगलोक, लेख धर्म में परिवर्तित हो गया, निराकार सर्वोच्च प्राधिकरण जिसे लेख महाप्रभु कहा जाता है।
- आधुनिकीकरण के प्रभाव ने आज के भात्रा के जीवन को बदल कर रख दिया है।
- अब, भौतिक दुनिया से संपर्क करें और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, वे विभिन्न व्यवसायों में शामिल हैं। भत्रों में, हम लोगों को उच्च शिक्षा प्राप्त करते और गैर सरकारी संगठनों और सरकारी संगठनों में नौकरी करते हुए देख सकते हैं।

कमर – एक आदिम जनजातीय समूह

- छत्तीसगढ़ के दक्षिण–पूर्वी भाग का एक मूलनिवासी समुदाय। ज्यादातर जंगली पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित है। कमर पर मानवशास्त्रीय साहित्य ने उन्हें भारत के आदिवासी के रूप में नामित किया। रसेल और हीरालाल ने उन्हें द्रविड़ियन जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया है और गोंड की शाखा के रूप में माना जाता है।
- वे मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के बिंद्रानावागढ़, नगरी और सिहावा जिले में वितरित किए जाते हैं। कमर गहरे वन क्षेत्रों में निवास करते थे जहाँ साल की घाटियाँ, सागौन की हरी और अन्य लकड़ी की प्रजातियाँ प्रचुर मात्रा में थीं।
- मैनपुर पहाड़ियों और अन्य खारियान पहाड़ियों में बांस की प्रचुरता है। कमर आमतौर पर मध्यम कद के होते हैं, जिनके शरीर अच्छी तरह से निर्मित होते हैं। युवा कमर पुरुष सुडौल, मजबूत और दुबले–पतले शरीर के साथ प्रभावशाली दिखते हैं और महिलाएं सुंदर और अच्छी दिखती हैं।
- उनकी त्वचा का रंग हल्के भूरे से हल्के काले रंग में भिन्न होता है। कमर की ड्रेस बेहद सिंपल है। पुरुष कभी–कभी श्पटुकाश या एक छोटी श्धोतीश पहनते हैं। कमर महिलाओं का पहनावा भी उतना ही सिंपल होता है।
- वे आम तौर पर केवल एक श्लुगड़ाश पहनते हैं जिसे कमर के चारों ओर बांधा जाता है और दाहिने कंधे तक ले जाया जाता है। कमर और स्त्री दोनों ने थोड़े–थोड़े आभूषण पहने। कुछ पुरुष प्रत्येक कलाई में ब्रेसलेट पहनते हैं और उनमें से कुछ अंगूठियां पहनते हैं। अल्युमीनियम के आभूषण बनाए जाते हैं।
- वे अपने गले में कई मनके हार लटकाते हैं। केवल कुछ कमर महिलाओं को उनके ऊपरी अंगों पर टैटू के निशान के साथ देखा जा सकता है।
- कमर गांव घरों के बिखरे हुए समूह प्रतीत होते हैं। इन गांवों के लेआउट में कोई निश्चित पैटर्न नहीं देखा जा सकता है। बड़ी बस्तियाँ आमतौर पर या तो पहाड़ियों पर या तलहटी के पास, जंगलों में गहरी स्थित होती हैं।
- छोटी बस्तियाँ सड़क के किनारे और मिश्रित गाँवों के पड़ोस में पाई जाती हैं। गुच्छों को कभी–कभी पेड़ों और झाड़ियों के साथ और कभी–कभी खुले स्थानों के साथ जोड़ा जाता है।
- कमर घर आम तौर पर झोपड़ियों के रूप में होते हैं, जिसमें एक रहने का कमरा होता है जिसमें घर की संपत्ति होती है और अनाज के भंडारण के लिए एक संलग्न छोटा कमरा, पारिवारिक चूल्हा और परिवार भगवान का निवास होता है। उनकी पुरानी वस्तुतः आत्मनिर्भर आदिवासी अर्थव्यवस्था से नई आंशिक रूप से अनन्य और आंशिक रूप से अन्योन्याश्रित अर्थव्यवस्था में परिवर्तन ने कमर की स्थिति और दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है।
- कमर इस क्षेत्र के ऑटोचथॉन हैं। उनकी लोक कथाओं के अनुसार वे उन सभी के स्वामी थे जिनका उन्होंने सर्वेक्षण किया था और वे झूम खेती करके अपनी आजीविका कमाते थे। एक पौराणिक कथा के अनुसार उस समय उनका नाम कमर नहीं बल्कि गौटिया या भूमि का स्वामी था।
- बाद में, जब उन्होंने राम और लक्ष्मण के जीवन को भुखमरी से बचाया, तो उन्हें अयोध्या के राजकुमारों द्वारा धनुष और बाण भेंट किए गए और तब से उन्हें कमर, या धनुष और तीर चलाने वाले लोगों के रूप में जाना जाने लगा।